'भागो–भागो आसमान फटने वाला है'

(एक डिप्लोमा फिल्म)

क्रमशः

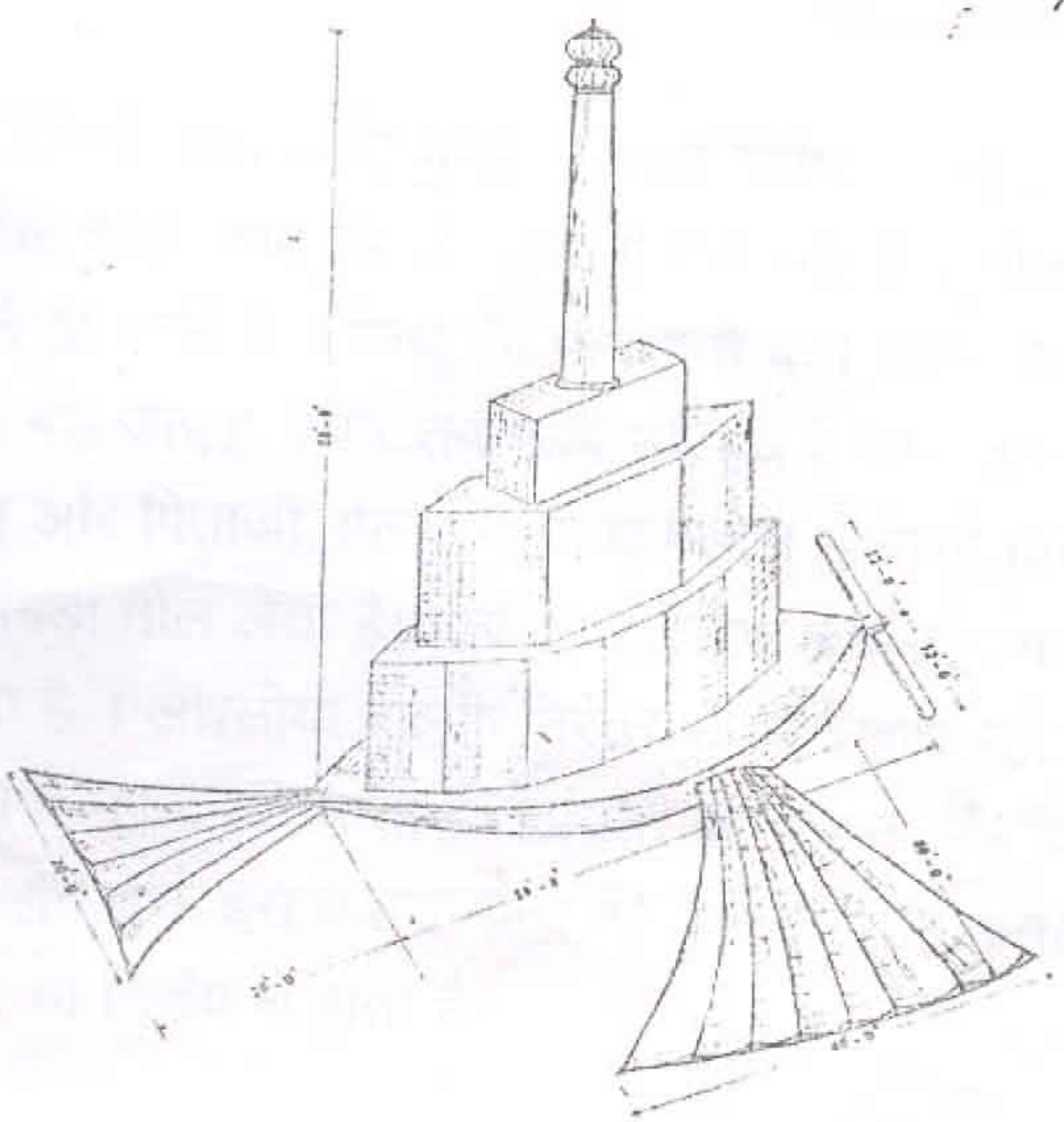

कथा, पटकथा, निर्देशन

अमित दत्ता

छायांकन – सविता सिंह

संकलन – अरुण बाली

ध्वनि – अजीत सिंह

Discussed the theme and treat meant
Approved. Amit Sinha
06/07/06

साधू तेज–तेज चलता हुआ निकल जाता है और उसके पदचिन्ह छूट जाते हैं ।कुंती ने झट से एक कील निकाली और पदचिन्ह पर ठोक दी ।साधू एक जगह खड़ा खड़ा छटपटाने लगा ।

'कहते हैं साधू की मृत्यू इसी कारण से हुई'

– कुंती के पति ने तरस खा कील निकाली और साधू आगे बढ़ गया ।

अन्दर/प्रातः

घर/कमरा

युवक खाट पर लेटा हुआ लाल किताब में कुछ लिख रहा है ।

'पर न कुंती, न प्रभाकर और न ही साधू, जिसे अब तो सचेत हो ही जाना चाहिए था – ने ध्यान दिया कि कोई और भी उसके पदचिन्हों पर नज़र गड़ाये बैठी है ।'

बाहर/प्रातः

गांव/गलियाँ

खाली गलियाँ ।

'साधू के जाने के बाद बिट्टी चुपके से आई, साधू के पदचिन्हों की धूल बटोरी और उसको जाकर गमले में डाल दिया । उसके बाद उसने उसमें गुलाब का पौधा लगाया । उसका विश्वास था कि जैसे–जैसे पौधा बड़ा होगा, साधू का प्रेम उसके लिए बढ़ता जाएगा और संगीत के बल पर उसने क्षणों में पौधा उगा भी लिया और उस पर फूल भी आ गए । (बिट्टी फूल को निहारती हुई ।)

'बिट्टी साधू के प्रेम में थी । पर साधू का जीवन ज्यादा न था ।'

'कुंती अपना टोटका सफलतापूर्वक कर चुकी थी ।'

बाहर/प्रातः

गली/कुंती की खिड़की

कुंती हसते हुए खिड़की बंद कर लेती है ।

प्रभाकर डयोडी लांघ कर बाहर आता है, (आस्तीने चढ़ाता हुआ)

साधू (प्रभाकर को) :

ठहर जा । वही रुक जा । मैं जानता हूँ तू इस कुलच्छनी के साथ छत पर बैठा ध्रुव तारे की प्रतीक्षा क्यों करता है ।

प्रभाकर (कुंती की तरफ अचानक मुड़ कर) :

इसकी इसी जिद के कारण मुझे रोज रात को एक से एक खतरनाक सांपों को पकडना पड़ता है ।

साधू (हँस कर) :

तू अपने दफ्तर समय से जाया कर ।

प्रभाकर (थोड़ा मायूस होकर):

कुछ भी कर लो गैर–हाजिरी लग ही जाती है ।

साधू (आकाश की ओर देखकर):

समय की चिंता अब मत कर, कल रात कौओं ने घड़ियाल फोड़ दिया ।

उधर कुंती नीचे जमीन की तरफ टकटकी बांध देखे जा रही है और बीच–बीच में फूंक मार रही है ।

– बंदर का पैर चीटिंया उठा कर ले जा रही हैं – उधर मौका पा साधू चुपचाप निकलने को होता है कि कुंती उसकी तरफ देख चिल्लाती है ।

कुंती:

भागता कहा है ढोंगी ।

साधू (सांस छोड़ कर):

हे मेरे परमेश्वर !

अन्दर / प्रातः घर / माँ का कमरा

माँ का हाथ बत्ती जलाता है ।

' अचानक पिली बत्ती जली और साधू की दाढ़ी हरी हो गई । '

बाहर / प्रातः गांव/ गली

कुंती दीवार से झांककर कूड़ा फेंक देती है ।

कूड़े में अजीबो–गरीब सामान :

मछलियों की आंखे । बंदर के पैर । तोते की चोंच । प्लास्टिक का केला । हरा आलू । पीला सेब । कौओं के काले पर इत्यादि । चाबी से चलने वाला खरगोश अचानक चिल्लाता है :

'भागो–भागो आसमान फटने वाला है '

उसके पीछे–पीछे दूसरे जानवर भागने लगते हैं ।

कुंती दीवार के पीछे से झांकती हुई –

कुंती : *यह सब इस ढोंगी के गाने का असर है । नहीं तो ऐसी विचित्र क्रिया हमने तो कभी नहीं देखी ।*

साधू : *(धीरे–धीरे मुड़ते हुए) चुप कर, टोटकों का सामान बाहर फेंक, मुझ पर आरोप लगाती है । यह सब तूने क्यों इकट्ठा कर रखा है । मैं अच्छी तरह जानता हूँ ।*

कुंती : *(प्रभाकर की ओर मुड़ कर जो अभी भी बत्तख का पीछा किए जा रहा है ।)*

' समझाइए इस साधू को '

(कुंती सुबह–सुबह झगड़े के लिए तैयार थी ।)

अन्दर/प्रातः घर/माँ का कमरा

– पैर के अंगूठे हिलते हुए –

' माँ धीरे–धीरे पलंग से उठी । गर्म पांव जमीन पर पड़े तो उसको अपने बचपन की ऐसी घटना याद आई जिसका उसको अंदेशा भी न था कि वह अब तक उसके दिमाग के किसी तह में इस तरह सुरक्षित छुपी हुई थी । अचरज हुआ ।

' पिछले कुछ दिनों से माँ को बचपन की अनेकों घटनाएँ याद आने लगी थी । इससे वह काफी परेशान थी और थोड़ी डरी हुई भी थी । उसने सुन रखा था कि मृत्यू से पहले बचपन एक फिल्म की तरह आँखो के सामने से गुजर जाता है ।

– माँ बिस्तर संवारती हुई –

'माँ हर काम बड़े संयम से करती थी । धीरे–धीरे उसने रजाई की तह लगाई । फिर उसने स्वीच बोर्ड की ओर हाथ बढ़ाया । उसने ध्यान दिया की उसका हाथ स्वीच बोर्ड के तरफ धीरे–धीरे बढ़ रहा है । बड़ी कोफ्त हुई । पहले तो वह सारे काम यंत्रवत कर लेती थी । पता ही नहीं चलता था कब सारे काम समाप्त हो गए । पर अब उसका ध्यान हर छोटी से छोटी क्रिया पर केन्द्रित हो जाता, पंखा कैसे घुमता है? चुल्हे में आग कैसे लगती है? पानी कैसे उबलता है?

यद्यपि वह इन सारे कामों को निपटाते वक्त ज़रा भी समय नष्ट नहीं करती थी । दो क्षणों के भीतर ही उसका दिमाग इन सब क्रियाओं का हिसाब लगा लेता । बस दिमाग काफी भारी हो जाता था इस मशक्कत से ।

माँ का हाथ अब भी धीरे–धीरे स्वीच बोर्ड की तरफ बढ़ रहा था ।

– और मैं एक सपना देखता हूँ –

'आसमान में उड़ते हुए अनेकों कौए, उनका गैंग फिर से बन चुका है । वह गांव के सारे बच्चे चुराने की फिराक में हैं ।

पहले वह घड़ियाल की घड़ी की चोंच से फोड़ देते हैं । प्रभाकर एयरगन से नाकाम सी कोशिश कर रहा है । औरतें जोर–जोर से चीख रही हैं क्रन्दन इतना भयंकर की आसमान में उड़ते बादल थम कर फट जाते हैं । बारीश । कौए गीले हो जाते हैं और बच्चे भी। मैंने ध्यान दिया बच्चे लाल धागे से बने हुए हैं ।

लगभग पूरे घर में ही फैल चुका है । हमारा घर इसी कारण बड़ा प्रसिध्द हुआ । बरगद वाले घर का पता कोई भी बता देता ।

तब मेरे पिता जी ने एक अनोखी कल्पना की । पूरे घर में फैले हुए बरगद के तने को कांट–छांट कर उससे फर्निचर का काम लेने लगे । मेज, कुर्सी, पलंग सब एक ही तने के तरह–तरह के रुप बन गए । मैं तो उसी पेड़ के नीचे सोता हूँ व मेरा पलंग उसी की जड़ से बना हुआ है ।'

बाहर/दोपहर गांव/चौपाल

चौपाल पर कुछ लोग बैठे हुए हैं । बूढ़े और बच्चे भी । बूढ़े लोग हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं । और कुछ बात कर रहे हैं ।

' गांव में अफवाहें फैलने लगी । इस बात पर बड़ी चर्चा हुई की आखिर दादी ने बरगद के पेड़ से अपने घर का सत्यानाश क्यों करवा लिया । कुछ लोगों का मानना था कि दादी ने उस पेड़ से विवाह किया था । दादा जी के मरने के भी कई वर्षों पहले ।'

' और फिर मैं ने एक दिन दादी को देखा '

अन्दर/दोपहर/शाम घर/ तहखाना

बैठ–बैठ कर चलने वाली वृध्द औरत एक दरवाज़े से प्रवेश करती है ।

' दादी कमरे के अंदर आई । तने की परिक्रमा की, आलिंगनबध्द किया, उसको चूमा, दही–दूध चढ़ाया और फिर उसके नीचे लेट गई । – विवाह की बात सच थी '

- उधर माँ बस अब उठने ही वाली थी –

अन्दर / रात घर/ टेबल

टेबल पर तरह–तरह का सामान पड़ा है । पीतल की डिब्बी । कपाल । सुखा गुलाब । जन्म पत्री । किताब पर गुलाब ।

'उसमें मैं ने माँ के आँसू एकत्रित करने शुरु कर दिए । आँसूओं को मोतियों में परिवर्तित करने की कला मैंने पिता जी से ही सीखी थी। खैर पीतल की डिब्बी का एक और भी प्रयोजन था । माँ से उसके तानों का बदला लेना । जब मन चाहा मैं उसको उसके जमे हुए आँसू दिखाकर उसका दिल दुखा सकता था ।

अन्दर/प्रातः घर/कमरा

खिड़की से होते हुए एक ऊंट धीरे–धीरे दरवाज़े की ओर बढ़ता है । सामने ही एक सुराही रखी पड़ी है । सूराही का मुंह शेर का है । पानी की बूंदे शेर की मुंह से टपक रही हैं । बूंदे सोए युवक के हाथ से टकराती हैं ।

' मेरे सिरहाने पड़ी सूराही में से पानी की बूंदे टपकती रहती हैं । माँ को बोला तो उसने पिता जी को बोलने के लिए बोला । अगर वह खुद ही देख ले तो क्या परेशानी? सूराही तो सालों से लीक हो रही है । उसको कभी भी उसकी जगह से न हिलाया जाता । पिता जी रोज रात को उसमें पानी भर कर रख देते बस । पानी पियो न पियो पर सुबह सूराही खाली हो जाती है ।

(सूखी धरती पर बूंदे टपकती हुई ।)

' पानी की बूंदे बस एक जगह टपकती थीं । जमीन नम हो गई और वहां से तरह–तरह के पेड़–पौधों का विकास होना आरंभ हुआ ।'

(जमीन पर घास उग आता है । छोटे–छोटे फूल भी ।)

' पहले तो माँ रोज सवेरे पौधों को जड़ से उखाड़ देती पर फिर एक दिन मेरी दादी ने मना कर दिया । बरगद का पेड़ है, तोड़ने से अपशगुन होगा । . .

पेड़ बढ़ता गया और आज मैं उसी पेड़ के नीचे सोता हूँ । पेड़ तो छतफाड़ कर बाहर निकल चुका है तथा उस पर तरह–तरह के पक्षी निवास करते हैं । अब तो यह पेड़

' उसके बाद उस पक्षी को मार कर प्रसाद के रुप में बाँट दिया गया । ऐसा टोटका पहले किसी नहीं देखा था । सूर्य से बच्चा माँगने की वजह से लोगों ने रवि की माँ का नाम कुंती रख दिया । बाद में यही नाम बदल कर कुंतो हो गया ।'

बाहर / प्रातः गांव / गली

साधू के पैर । एक पैर उठाता है दूसरा रखता है । छन–छन की आवाज ।

बाहर / प्रातः घर/छत

युवक की खिड़की के ठीक उपर ही छत पर पिता जी सोए हैं । उनकी खाट जूट से बनी है । पीछे से एक ऊंट धीरे–धीरे निकलता है ।

' पिता जी ने मुझे एक दिन इसके बारे में विस्तार से बताया था । मेरी जागृत अवस्था में यह सब बातें बकवास मालूम पड़ती हैं । आंख बंद देखने से ही इनका असली मतलब समझ में आता है ।'

' अपनी समझ जेब में रख ' – पिता जी एक दिन दहाड़े थे ।'

बाहर /शाम बाजार/तुलसीबाग

– युवक बाजार में से जा रहा है । –
बर्तनों की दुकान से पीतल की एक डिब्बी खरीदता है ।

' तब से मैं समझ को जेब में लिए घूम रहा हूँ । इसके लिए मैंने एक पीतल की डिब्बी भी खरीदी थी ।'

बाहर / प्रातः तंग गली

एक तंग गली से बहुत सारे बच्चे (चिल्लाते हुए) आ रहे हैं । उनके हाथ में तरह-तरह का सामान है ।

अंदर / प्रातः घर / कमरा

कुंती रो रही है और एक लाल धागे की नन्ही गुड़िया को स्तनपान करवाए जा रही है । प्रभाकर का रो- रोकर बुरा हाल है । आंखे काली हैं । तभी बहुत सारे बच्चे कमरे में प्रवेश करते हैं । औरते ढोलक बजा रही है । कोई उस पर चम्मच मार रहा है । बड़ा तंग सा कमरा है । कुंती लाल धागे की बनी गुड़िया को वक्ष से सटाए हुए है । कमरा लोगों से खचाखच भरा हुआ है । तभी जंगी कमरे में आता है । उसके पास एक चिड़िया है, जिसको वह टांगो से पकड़ा हुआ है । जंगी पक्षी को प्रभाकर के सिर पर रखता है । फिर कहता है -

जंगी : 'चुप करो ... सब चुप करो'

-(फिर थोड़ा रुक कर)

'सूर्य एक बालक को गिरने दो समय की सीमाओं को लांघ उसको जन्म लेने दो, गिरने दो मेरे हाथों पर या फिर मेरी गोद में ।'

-(फिर जंगी कुंती की ओर मुंह कर पूछता है :)

जंगी : 'ऐ कुंती, बालक ने जन्म लिया कि नहीं ?'

- और वह वापिस जवाब देती है ।

कुंती : 'हाँ और उसने तो स्तनपान करना भी शुरु कर दिया है ।'

- कुंती के ऐसा कहते ही तालियाँ बजती है । लोग एक दूसरे को मुबारकबाद देते है ।

बाहर / रात

नदी

प्रभाकर तैरता हुआ, पुरानी जंग लगी मेटाडोर के पास जा रहा है । मेटाडोर आधी पानी में है। प्रभाकर तैरता हुआ उसके पास आता है । मेटाडोर में एक बच्चा रो रहा है ।

' रवि की माँ के घर कोई बच्चा नहीं हो रहा था । ऐसे में रवि का गांव के बाहर पड़ी जंग लगी मेटाडोर में मिलना चमत्कार ही था उसके लिए । प्रभाकर रोज वहाँ स्पेअर-पार्टस् चुराने जाता था । तभी उसको एक दिन रवि मिल गया ।'

अंदर / प्रातः

गांव / घर

साधू सब घरों की खिड़कियों दरवाज़ो से दिखता है । चुप-चुप जा रहा है ।

' साधू ने अचानक गाना बंद कर दिया है (शायद अब वह सोच रहा है कि बत्ती जलने में देर हो रही है आज, जबकि यह गलत है । मुझे और साधू दोनों को रोज़ यही आभास होता है पर माँ रोज़ अपने समय पर उठती है । बत्ती एकदम सही समय पर ही जलेगी । ')

-साधू अचानक गाना गाना शुरु कर देता है -

' साधू ने भी ऐसा सोच गाना शुरु कर दिया ।'

बाहर / प्रातः

घर / कुंती

आंगन । कुंती का घर । गाने के अनुसार वह टोटके का सामान इकट्ठा करती हुई । ऊन की गुड़िया को चरखे पर उधेड़ती हुई ।

' रवि के मिलने से पहले कुंती ने बड़े प्रपंच रचाए . . . '

अंदर / प्रातः

माँ की खिड़की / घर

साधू खिड़की के पास खड़ा । बस पक्षी गा रहे है । वह चुप है । माँ सोई हुई है ।

' माँ सोई है । साधू सोच रहा है की बत्ती जलाते ही उस पर पीली रोशनी पड़ेगी । माँ शायद अब जाग ही जाएगी ।'

रसोई । कढ़ाई । पुराने डब्बे । रसोई की शेल्फ । चुल्हा

(माँ का मन) साधु चुप

' उसने अपनी परछाईयों से समझौता कर लिया है । कपड़ों पर लगी फूलकारियों की चमक उसकी आंखों से कहीं ज्यादा ।'

बाहर / प्रातः

गली / दीवार

साधू दीवार हाथ रगड़ता हुआ गाना गाता है ।

' साधू के सामने वाली दीवार की भी एक कहानी है ।'

दीवार के उस पार झांकने से एक महिला (कुंती) दिखती है । पीछे उसका पति (प्रभाकर) एक बत्तख का पीछा कर रहा है । थोड़ी ही दूरी पर बैठा एक बालक पढ़ाई कर रहा है ।

' रवि उसका अपना पुत्र नहीं ।'
' यह कहानी मेरी दादी हमेशा सुनाती थी ।'

- रवि के जन्म की कथा -

'सामने एक गंदी नाली बैंगनी रंग की नदी में परिवर्तित हो जाती । परियाँ एक-एक कर उड़तीं और नाली की मुंडेर पर उगे मेथी के साग पर आ बैठती ।'

अंदर / प्रातः

घर

युवक और उसके पास ही दूसरे कमरे में सोई उसकी बहन । बहन के बाल साँप जैसे नाचते हैं ।

'मुझे और मेरी बहन को मेथी का साग बहुत पसंद है । खासकर नाली के किनारे उगने वाला ।'

- खड़की से देखने पर एक वृध्द महिला दिखती है ।
- वह बैठ-बैठ कर चल रही है ।

'दादी रोज जाकर उसको चुन लाती । आलू और दही के साथ उसको परोसा जाता । कुछ परियों को तो मैं ने जरुर खाया होगा । क्यों कि जिस दिन भी मैं वह साग खाता सपने में परीलोक पहुंच जाता. । कई बार परियों ने शिकायत की कि मैं ने उनकी आत्मा अपने पेट में छुपा ली है । एक दिन मेरे पर भी उग आएंगे शायद ।'

-दादी बैठ बैठ कर जा रही है -

बाहर / प्रातः

आंगन / गली

आंगन में एक विशाल आम का पेड़ है । शाखाओं से झांकने पर साधू दूर खड़ा दिखाई पड़ता है । सामने कबूतर बैठे हैं । पक्षियों के गाने की आवाज उसके गाने के साथ घुल-मिल सी गई है ।

अंदर / प्रातः

घर

युवक रजाई और युवक

रज़ाई के रंग – फूल और सोते हुए युवक का मुंह । (आवाज)

मैं पिताजी की तरह विद्वान तो नहीं पर इतना जरुर जानता हूँ कि पहले यह गाँव एक मछली के आकार का था और तब इस पर कौओं के बहुत आक्रमण हुए । इसलिए जब एक सयाने को बुलाया गया तो उसने पूरे गांव का आकार बदलने को कहा – इसलिए यह गांव अब एक कुत्ते के आकार का है ।

बाहर / प्रातः

गाँव / गली

साधू गोल–गोल घूम कर गा रहा है । गली में गाय उसकी आवाज सुन कर थम जाती है । साधू की डफली । खाली गलियाँ । खाली घर । आँगन ।
आँगन में तरह–तरह का सामान बिखरा पड़ा है ।

' साधू की डफली चमड़े की । चमड़ा साँप का या फिर बैल, हिरण रोज काके से बहस होती – काके की समझ ग्रंथों से – सब पढ़ रखा है उसने ...

(– इंटो की दीवार)

मजा तो बहुत आता था । हम दो–तीन जन गर्मियों की दोपहर में गली में नाली के किनारे खाट बिछा आम चूसते और काके की बातें । काके के पास बातों की कमी न थी और हमारे पास आमों की गुठलियों के ढेर पर अक्सर परियाँ नाचते हुए मिल जाती। छोटी–छोटी परियों को काका ढूंढ निकालता, उनसे बातें करता ।

(दीवार पर कीचड़ चढ़ जाता है वह परियों का रुप ले लेता है ।)

(एक बुढ़िया नाली के किनारे साग चुन रही है ।)

- साधू का हाथ – हाथ में डफली – गोल–गोल घूम कर गा रहा है ।

अंदर / प्रातः घर

- खिड़की से प्रकाश छिटककर बिस्तर पर लेटे हुए कोई बीस–बाईस वर्षीय युवक के चेहरे पर पड़ता है । वह रात को पढ़ते–पढ़ते सो गया था ।

- हाथ में लिपटे हुए साँप ने एक किताब पकड़ रखी है ।

- किताब नीचे गिरती है ।

बाहर / प्रातः गाँव / गलियाँ

साधू गाता हुआ एक गली से निकल दूसरी में जाता है ।

अंदर / प्रातः घर

युवक करवट बदलता है । धीरे– धीरे ।

वह रोज जो यह भजन गाता है । मेरी समझ में तो कभी नहीं आया । ' (A)

बाहर / प्रातः गाँव / गलियाँ / दिवार

साधू गा रहा है । दीवार के पीछे से केवल उसका हाथ दिख रहा है । दीवार पर एक बिल्ली ।

दृश्य एक : बाहर / दिन स्वप्न

उबड़-खाबड़ धरती । भ्रम पैदा होता है कि पास से देख रहे हैं या दूर से । तभी एक नन्हा बालक आता है और उपर देखता है । एक कौआ उसको देख रहा है । बालक को ओर उड़ता है, झपट्टा मार फिर उड़ जाता है । बालक की पीठ के पीछे से आकाश दिख पड़ता है । झपट्टा इतना भयंकर की बालक आवेश में नीचे झुक जाता है । बालक धीरे-धीरे नीचे झुकता है । नीचे झुकता हुआ वह निरंतर धरती की ओर देखता रहता है । वहाँ एक छोटा फूल है । पहले वह अपने हाथ की ओर देखता है, फिर उपर । मच्छर के भिनभिनाने की आवाज । हाथ में चमकता हुआ फूल । बस स्टाप । बालक फूल सूंघता है । सूंघते ही छींक । सड़क के दूसरी ओर खड़ी महिला का पर्स नीचे गिर जाता है । पर्स अपने-आप खुल जाता है । पर्स के अंदर से साँप निकल भागता है । बालक औरत की ओर देखता है । इतने में एक बस दोनों के बीच आ रुकती है । एक हाथ झट से औरत को अंदर खिंचता है । औरत झटके से सीट पर आ बैठती है । उसका पल्लू हवा से उड़कर खिड़की से बाहर आ जाता है । पल्लू यूवक के चेहरे को ढक देता है । बालक बस के साथ दौड़ लगाता है और खिड़की से निकले हुए पल्लू को पकड़ने की कोशिश में अंततः पीछे बहुत पीछे छूट जाता है ।

X. — Tamhini Ghat

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान
प्रस्तुत करता है

लाल किताब

बाहर / प्रातःकाल गांव

गांव की तरह-तरह की गलियाँ । पक्षियों के चहचहाने की आवाज । धीरे-धीरे सूर्योदय होता है । एक साधू के गाने की आवाज दूर से आती हुई । सूर्योदय का प्रकाश खिड़की पर रखे हुए सूरजमुखी के फूल पर पड़ता है तो सूरजमुखी अपनी दिशा प्रकाशनुसार बदल लेता है ।

पात्र

Swapnil

१. बालक : १०-१२ साल । खाकी निकर । तीखे नैन-नक्श — Nachiket's brother

२. महिला- एक : (२०-२५ साल) । सांवली । थोड़ा देखने पर सुंदर प्रतीत होती है । — Kalyani

३. युवक : (२०-२२ वर्षीय) । मूंछे । स्वप्निल आँखें । — Soman | K Rajesh

४. साधूः (३०-३५) गहरा काला रंग । शायद कभी चेहरा दिखाई न दे । — Potdar / Dutta

५. बहन : (१०-१५ साल) । लंबे बाल । —

६. दादीः अती वृध्द । बैठ-बैठ कर चलेगी । — Gaikwad's mother / Bijli

७. माँ : (५०-५५वर्षीय) पतली । तीखे नैन-नक्श । — Mahesh's madam

८. महिला (दो) : (कुंती) टोना- टोटका करने वाली । लंबे बाल । विचित्र चेहरा । सुंदर होने पर भी डरावनी । (उम्र ३०-३५) — Meenal

९. प्रभाकर : उम्र-(३०-३५)- सांवला । पतला । ऊची आवाज में बात करने की आदत । — Ashu.

१०. रवि : ५-७ साल का बालक — Nach's brother

११. नवजात शिशु (?)

१२. जंगी : (३५-४०)- गोरा । लंबा । विचित्र हाव-भाव । — Vimal

१३. पिताजी : (६०-७०)- अती वृध्द- अपनी उम्र से कही ज्यादा बूढ़े दिखते हैं। जनेऊ पहनते हैं । धीरे-धीरे चलने की आदत । — Puranik

१४. छोटी लड़की : (माँ का बचपन) - बहन से ही यह करवाया जा सकता है —

१५. खिड़की पर परछाई : (१६-१९ वर्षीय) —

१६. १०-१५ बच्चे । औरतें ।- (जंगी- कुंती)

१७. कुछ बूढ़े लोग । बच्चे । - (चौपाल) हुक्के के साथ

सार

खिड़की के पास सोया युवक । बाहर प्रभात–फेरी वाला साधू निरंतर चक्कर काट रहा है । घर में सब सोए हैं ; माँ बस अब उठने ही वाली है । साधू की प्रतीक्षा है बत्ती जलने की और वह आगे बड़ जाएगा ।और तब, सब धीरे–धीरे जाग जाएंगे ; वह, बहन और पिताजी ।पर तभी साधू पड़ोस में बसने वाली डायन से झगड़ा मोल लेता है। गांव का इतिहास घूम–घूम कर वापिस आता है । अधसोया बालक निरंतर सपने देखता रहता है ; सोता है, फिर उठ जाता है ।अंततः वह स्वप्न और यथार्थ में रोज होने वाले इस उबाऊ द्वन्द को अपनी लाल किताब में दर्ज करने का निर्णय ले लेता है।

अन्दर/प्रातः

घर/खिड़की

खिड़की पर खड़ी परछाई पूछती है – *' आज कौन–सा सपना देखा?'*

युवक निरुत्तर था । करवट बदलते हुए । *' अब रोज नए–नए सपने कहां से लाऊं '*

बाहर/प्रातः

घर

माँ ने चुल्हा जला लिया है । लोहे की फूंकनी से जोर की फूंक माली तो धूंआ पूरे कमरे में फैल गया ।बहन खांसते हुए उठी ।

बाहर/प्रातः

छत / आंगन

पिता जी खाट पर उठ बैठे हैं । धीरे–धीरे सीड़ीयां उतरते हैं । लोटा उठा, जनेऊ कान पर लपेटते हैं । जब वह आंगन से निकलते हुए पाखाने की तरफ जाने को हुए तो उनका ध्यान अपनी पत्नी की ओर गया । उन्हें बड़ा विचित्र लगा । माँ ने धुएँ से बचने के लिए काला चश्मा लगा लिया था । कुछ बुदबुदाते हुए वह वापिस दूसरे कमरे की ओर से मुड़ते है ।

अन्दर/प्रातः

घर/कमरा

पिता जी वैसी ही अवस्था में युवक के कमरे में प्रवेश करते है । युवक औंधे मुंह सोया पड़ा है । पिता जी हल्के पैरों से चलते हुए उसकी तरफ आते हैं ।

पिता जी (दबी आवाज में):

सो रहे हो ?

युवक(बिना मुड़े):

नहीं सोच रहा हूँ ।

बाहर/प्रातः

आंगन

पिता कुछ बुदबुदाते हुए दरवाज़ा खोलते हैं । अगर वह अब भी छत पर होते तो देख पाते की साधू गांव पार कर चुका है । बस उसके गाने की आवाज दूर से आती हुई ।

– समाप्त –